International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 01-11-2019; Accepted: 03-12-2019; Published: 01-01-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 01-05

आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव

गार्गी सिंह [1], डॉ. अल्पना वर्मा [2]
[1] शोधकर्ता, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोध निर्देशिका, एम्पल ड्रीम्स इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन सीहोर, , मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
न्यू मीडिया का विस्तार आज तेजी से हो रहा है, आज का युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है। तकनीकि की विकास यात्रा ने इंटरनेट की सुविधा को मोबाइल फोन तक पहुचा दिया है। आज बैकिंग से लेकर शापिंग सभी ऑनलाइन को गई है, एक क्लिक ने विश्व को अपने में समाहित कर लिया है मीडिया भी इससे अछूता नहीं रहा आज मीडिया अपनी प्रभावशीलता के चलते विश्व भर में अपनी लोकप्रियता इतना बड़ा लिया है कि आज समाज का हर वर्ग चाहे कोई भी हो गॉव हो शहर हो सभी आज इससे बच नहीं पाये है एवं आज इसका इतना प्रभाव बड़ गया है कि हर वर्ग के लोग इसे अपनाने में पीछे नहीं हट रहे है, यह शोध पत्र मे इस बात को जानने की कोशिश की गई है कि आज के युवा वर्ग पर इसका कितना सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

मूल शब्द: आधुनिक, न्यू मीडिया, मोबाइल, इंटरनेट

प्रस्तावना
आज का युग सूचना एवं तकनीकि पर आश्रित युग है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्वयं की और अपने आस–पास की जानकारी के अलावा संपूर्ण विश्व से परिचित होना चाहता है। इस कार्य मे उसका सबसे बडा सहयोगी मीडिया है। मीडिया सिर्फ सूचनाओं का जाल नहीं वरन् मानव मस्तिष्क के मनोरंजन का अति उत्तम साधन है। मीडिया मे समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो टेलिविजन व इंटरनेट सम्मिलित है। इन सभी ने सामाजिक परिवर्तन का दायित्व अपने कांधो पर उठा रखा है। क्योकि ये सभी माध्यम समाज के हर वर्ग से अपनी साझेदारी बनाए हुए है। चाहे वे बच्चे हो, किशोर हो, युवा या फिर बुजुर्ग। हर आयु वर्ग के लिये पत्रिकाएं, समाचार पत्र और टेलीविजन पर विशेष कार्यक्रम प्रकाशित किए जाते है जिससे सभी वर्ग अलग–अलग तरह के ज्ञान से लाभान्वित होते है।

प्रत्येक मनुष्य अपनी जिज्ञासा को शांत करना चाहता है प्रतिदिन घट रही घटनाओं को जानने के लिए उत्सुक रहता है उसकी इस जिज्ञासा को शांत करने का कार्य मीडिया करती है मीडिया हर क्षेत्र के लोगो की जिज्ञासा को शांत करती है जैसे डॉक्टर को चिकित्सा क्षेत्र का ज्ञान देकर, कृषक को खेती का, नेता को राजनीति का, व्यापारी को व्यापार का, विद्यार्थी को शिक्षा का, महिलाओं को उनकी उपयोगी जानकारी एकत्रित कराकर सभी की जिज्ञासाओं को शांत करने का प्रयत्न करती है। जिस प्रकार पौधे के जीवन और विकास के लिए पानी, खाद्य, धूप आवश्यक है ठीक उसी प्रकार मनुष्य के सर्वागीण विकास के लिए मीडिया वर्तमान में मीडिया साधन नहीं वरन् साध्य बन चुकी है। मीडिया हर घर में अपनी किसी ना किसी साधन के रूप में अपनी जगह बना रही है। आज वह परिवार में एक वस्तु ना रहकर जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। प्रायः समाचार पत्रो के साथ ही हमारे दिन की शुरूआत होती है। कई बार तो स्थिति यहां तक बन जाती है कि अगर हमें समाचार पत्र न मिले तो हमे पूरे दिन खालीपन लगता है। आज हर घर में रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, सेलफोन जैसे कोई ना कोई मीडिया का एक या एक से अधिक साधन उपलब्ध होते है। हर घर में मीडिया ने अपनी अनिवार्य उपस्थिति बना रखी है। हम मीडिया के आदी हो चुके है इसका मुख्य कारण मीडिया का व्यापक, रोचक तथा उसकी सरलता है। आज मीडिया इतना व्यापक हो चुका है कि जन–जन तक पहुँचने में इसे कुछ सेकण्ड का समय ही लगता है द्रूतगामी स्थानो पर भी दूरी समेटते हुए पहुँच जाते है रोचक इतना है कि मानव इसके माध्यम से अपनी सभी जिज्ञासाओं को शांत कर सकता है क्योकि मीडिया के पास हर वर्ग हर आयु के व्यक्ति की जिज्ञासा रूपी प्रश्नो को शांत करने के पर्याप्त उत्तर है और सरलता इसलिए कि व्यापकता एवं रोचकता के कारण सभी इससे जुडे हुए है मीडिया के रूप है इसलिए किसी ना किसी रूप में वह सरलता से जन–जन तक पहुँच जाता है।

परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं और इस परिवर्तन के नियम से मीडिया भी अछूता नहीं रहा मीडिया में गुण के साथ–साथ दोषो ने भी घुसपैठ प्रारंभ कर दी । प्रारंभ में पत्रकारिता एक मिशन थी, आज वह व्यवसाय में परिवर्तित हो चुकी है और अधिक धन कमाने की लालसा और व्यवसाय लाभ के लिए इसका उपयोग किया जाता है। मीडिया की अपने अलग नीति आदर्श व उद्देश्य होने चाहिए जिनसे देश में हर क्षेत्र में उत्थान हो पतन नहीं। मीडिया को देशहित, जनहित और कल्याण की भावना को ध्यान में रखते हुए कार्यो को संपादित करना चाहिए और अपने आप को राष्ट्रहित का सबसे बडा चिंतक बनाना चाहिए। लेकिन आज मीडिया में एक दुसरे से आगे बढने की होढ तथा आर्थिक प्रतिस्पर्धा ने मीडिया को बुराइयों से ग्रसीत कर लिया है अजगर रूपी लालच मीडिया को धीरे–धीरे निगलता जा रहा है। आज मीडिया पर व्यवसायिक हित इतना अधिक हावी हो चुका है कि वह अपनी जिम्मेदारीयों और उद्देश्यों से विमुख होता जा रहा है। मीडिया से देश समाज का हर वर्ग जुड़ा हुआ है अपनी असीमित इच्छाओं तथा जिज्ञासाओं की संतुष्टी के लिए ये सभी मीडिया पर ही आश्रित होते है इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि इन्हें जानकारी देते समय मीडिया सतर्कता बरते एवं वही जानकारी एवं ज्ञान इन तक पहुँचाए जिनसे मिलने वाला लाभ सकारात्मक हो। अनेक समाचारो की सत्यता को दबाव और लालच के कारण छिपा लिया जाता है, आवश्यक सूचना को सांप्रदायिकता का ठप्पा ना लगे इसलिये छुपा लिया जाता है परन्तु यह परम आवश्यक है कि हर दबाव व बंदीशों के बाद भी हर खबर की सच्चाई जन–जन तक पहुँचे। लोगो का विश्वास मीडिया पर बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि मीडिया राष्ट्र उत्थान, समाज उत्थान और दुख तकलिफो को दूर करने, न्याय दिलाने, अंधविश्वास व कुरीतियों को दूर करने की दिशा में

कार्य करती रहे ताकि देश की जनता का विश्वास मीडिया पर बना रहे और मीडिया नित्य नई ऊँचाईयों और बुलंदियों को छुता जाए और एक स्वर्णिम राष्ट्र का निर्माण हो सके।

अध्ययन का उदेश्य

सभी शोधो में किए गए कार्यो का नियोजन विशिष्ट उद्देश्यपूर्ण होता है। यह शोध भी विशिष्ट उद्देश्यों को पाने हेतू किया जा रहा है। इस शोध में मीडिया और किशोर जैसे महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली वर्ग को सम्मिलित किया गया है ये दोनो ही वर्ग अटूट मजबूती के साथ एक–दूसरे से जुड़े हुए है तथा एक दूसरे को प्रभावित करते है अतः इस शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है–

1. ग्रामीण व शहरी किशोर बालक एवं बालिकाओं पर मीडिया के पड़ने वाले प्रभावो की जानकारी प्राप्त करना।
2. मीडिया के प्रति किशोर बालक एवं बालिकाओं की रूचि का पता लगाना।
3. किशोर बालक एवं बालिकाओं की मानसिकता पर मीडिया के पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी प्राप्त करना।
4. किशोर बालक एवं बालिकाओं के जीवन पर मीडिया के पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की जानकारी प्राप्त करना।
5. मीडिया के प्रति अभिभावक एवं शिक्षको के सकारात्मक सोच का पता लगाना।

वर्तमान में मीडिया में असीमित संभावनाएं है, किन्तु मीडिया अपनी अधिकांश शक्तियों का प्रयोग औद्योगिक संस्थान, और अमीर घरानो व पदासिन शक्तिशाली व्यक्ति को प्रसन्न कर अधिक धन बटोरने के लिए कर रहे है। इससे मीडिया के निष्पक्षता का गुण दिखावे की चकाचौंध से दब चुका है। आज मीडिया केवल सच्चाई के पर नहीं वरन् झूठ का आवरण ओढ़े दिखाई देती है। अगर समाचार नहीं मिलता तो स्वयं समाचार बनाए जाने लगे है। समाचार कितना ही बड़ा हो उसे छोटा करना, छोटे को बड़ा करना, गंभीर को साधारण तथा साधारण को गंभीर बना देना आज की मीडिया का मुख्य गुण हो गया है। अपनी जरूरत के अनुसार समाचार को जन–जन तक पहुँचाना और अगर अपना हित ना हो तो समाचार को वहीं गला घोट कर दबा देना मीडिया का खेल हो गया है।

मीडिया जनमानस को जाग्रत करने का सर्वोपरि एवं सशक्त माध्यम है परन्तु आज मीडिया अपने पथ से भटक चुकी है। वह पथभ्रष्ट हो चुकी है आज मीडिया ने लोकप्रियता अर्जित करने के लिए प्रतियोगिता को अपना लिया है जिस कारण मीडिया में अश्लीलता, कामुकता, ग्लैमर, विज्ञापनो का प्रभाव अधिक बढ़ा है। मीडिया को अपना व्यवसाय बढ़ाने के लिए ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जिससे युवा शक्ति दिशाहीन और भ्रमित हो जाए मीडिया के प्रभाव से वह अनुचित बातो व प्रवृत्तियों की ओर अग्रसर ना हो जाए क्योंकि मीडिया का उपयोग करने वाला सबसे बड़ा वर्ग किशोरो और युवाओं का है अगर मीडिया का दुष्प्रभाव किशोरो और युवाओं पर पड़ता है तो राष्ट्र की उन्नति, सामाजिक विकास, तकनीकि व प्रौद्योगिक विकास भी प्रभावित होंगे।

टेलीविजन देखने वालो में सबसे बड़ा वर्ग किशोरो का है और यह कहा जाता है कि इस उम्र में बालक भ्रमित रहता है, क्योकि उन्हें ना तो बालको में सम्मिलित किया जाता है ना ही वयस्को में, इसलिए वे अपनी अलग ही दुनिया में खोये रहते है और इस अवस्था में उनका सबसे बड़ा साथी टेलीविजन होता है। टेलीविजन में दिखाई जाने वाली ज्ञान की बाते तो लाभान्वित करती है परन्तु अनुचित बाते भी उन्हें रूचिकर लगने लगती है, इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि किशोरो के सामने आदर्श युक्त कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया जाये जिससे किशोरो का तथा राष्ट्र का भविष्य लाभान्वित हो सके।

हर व्यक्ति व वस्तु की अपनी–अपनी सीमाएं होती है और जब भी कोई अपनी सीमाओं का उलघंन करता है तो वह विचारणीय हो जाता है। कुछ ऐसी ही परिस्थिति हमारे सामने मीडिया ने प्रस्तुत कर दी है। इसका प्रमुख कारण आर्थिक प्रतिस्पर्धा है एक–दूसरे से अधिक सम्पन्न बनने की चाह में और अधिक धन बटोरने की महत्वाकांक्षा ने मीडिया को प्रदूषित कर दिया है मीडिया ने अनुचित बातों को अपने दामन में शरण दे रखी है जिसका सीधा प्रभाव हमारे किशोरो के मस्तिष्क आचरण व रहन–सहन पर पड़ता है। किशोर मस्तिष्क व मन दोनो अबोध होते है उन्हें अनुचित बाते भी रूचिपूर्ण लगने लगती है और जो उन्हें आनंद देती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि किशोरो तक उन्हीं बातो को पहुँचाया जाए जो उनके लिए हितकर हो परन्तु वर्तमान परिपेक्ष्य में उन्हें मीडिया से दूर रखना नामुनकिन हो गया है क्योकि जिस तरह सभी के दो पहलु होते है अच्छा और बुरा उसी तरह मीडिया के भी दोनो पहलू है अच्छे और बुरे। अगर हम किशोरो को मीडिया से दूर रखते है तो उसके ज्ञान का विकास अवरूद्ध हो जाएगा, इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि किस तरह किशोरो को अनुचित बातो से दूर रखा जाये।

शोध का महत्व

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आज लगातार वर्तमान तक राष्ट्र व समाज को समृद्ध बनाने के लिए शिक्षा को सबसे अधिक प्रभावशाली माना गया है। कहा गया है कि जिस तरह की शिक्षा बालक को प्रदान की जायेगी बालक उन्हीं बातो का अनुकरण करेगा और जिन बातों का बालक अनुकरण करेगा उसी तरह का विकास वह राष्ट्र व समाज का करेगा, इसलिए बदलाव लाने का मुख्य स्त्रोत शिक्षा को ही माना गया है। शिक्षा को सिर्फ बालको तक सीमित नहीं किया गया वरन् हर आयुवर्ग को शिक्षित करने का अथक प्रयास सरकार द्वारा किया जा रहा है, कई योजनाएँ चलाई जा रही है जैसे सर्वशिक्षा अभियान, प्रौढ़ शिक्षा, स्त्री शिक्षा, निःशुल्क शिक्षा वही लड़कियों को साक्षर करने के लिए लाड़ली लक्ष्मी योजनाएं चलाई जा रही है एवं साक्षरता के प्रतिशत को बढ़ाने के लिए निःशुल्क किताबे, कपड़े, साइकिल, कम्प्यूटर, लेपटॉप, मोबाइल फोन एवं विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन तक की व्यवस्था कराई गयी है। कई प्रकार की छात्रवृत्ती का वितरण किया जाता है जैसे अल्पसंख्यक छात्रवृत्ती, गरीबो के लिए छात्रवृत्ती, अनुसूचित जाति व जनजाति छात्रवृत्ती, पिछड़े वर्ग को छात्रवृत्ती इन सभी योजनाओं का मुख्य उद्देश्य निरक्षरता को दूर करते हुए भारत को शतप्रतिशत साक्षर देश के रूप में प्रस्तुत करना है। देश में बालमजदूरी करवाना दण्डनीय अपराध घोषित कर दिया गया ताकि हर बच्चा किशोर शिक्षा प्राप्त कर सके अपना पेट भरने के लिए उसे विवशतावश काम ना करना पढ़े इसलिए उसके भोजन की व्यवस्था विद्यालय में कराई गई विद्यार्थी की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति जैसे विद्यालयीन गणवेश, किताबे, लेखनी विद्यालयों में ही उपलब्ध करवायी जाने लगी इसका परिणाम भी सूखद है आज भारत में लगातार साक्षरता का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है।

शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालय में नवीन साधनो का प्रयोग किया जा रहा है इन नवीन साधनों में मुख्य व महत्वपूर्ण साधन मीडिया है। आज मीडिया का प्रयोग बालक विद्यालय के अतिरिक्त घर पर भी करता है। विद्यालयों में बालको को कम्प्यूटर द्वारा शिक्षा, प्रोजेक्टरो द्वारा शिक्षा, इंटरनेट के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा, दैनिक पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से नित्य घटित होने वाली जानकारी दी जाती है। इन सभी माध्यमो ने विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को रोचक के साथ–साथ आसान भी बना दिया है। इन सभी साधनों ने बालको के मन व मस्तिष्क में जिज्ञासा को और अधिक बढ़ा दिया है इस जिज्ञासा के वशीभूत होकर बालक विद्यालय के अलावा घर पर भी इन साधनों के संपर्क में रहता है। आज किशोरो का बड़ा वर्ग अपना अधिक समय मीडिया

के साथ बिताना ही पसंद करता है उसके अकेलेपन का सबसे बड़ा साथी मीडिया बन चुका है। उठते–बैठते आप आसानी से अपने आस–पास के किशोरो को मीडिया का उपयोग करते आसानी से देख सकते है। किशोर मीडिया के इंटरनेट का उपयोग अधिक करते है जिसमें अताह जानकारी है यह वह समूह है जिसका कोई छोर नहीं है इसमें डूबने वाला डूबता चला जाता है उसे किनारा नहीं मिलता उसकी जिज्ञासाएं बढ़ती जाती है शांत नहीं होती वह इसकी अविरल धाराओं में घिर जाता है। मीडिया की किशोरो से इतनी अधिक निकटता के कारण यह जानना आवश्यक हो जाता है कि मीडिया के प्रभाव से बालको में होने वाला परिवर्तन समाज किस प्रकार का है, यह परिवर्तन समाज व राष्ट्र की अपेक्षा के अनुरूप है या नहीं।

शोध का सीमांकन

यद्यपि शोध कार्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत है किन्तु शोध प्रबंध में सीमा को ध्यान रखते हुए शोध कार्य का क्षेत्र सीमित किया गया है। इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए खण्डवा व सीहोर जिलो को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया है। इनमें उच्चतरमाध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है तथा उन्हे शोध का आधार बनाया गया है।

सोशलमीडिया के सकारात्मक प्रभाव

- अधिकाधिक लोगों तक अपने विचारों का आदान–प्रदान किया जा सकता है।
- इन पर त्वरित प्रकिया टू–वे–कम्युनिकेशन भी प्राप्त कर सकते हैं।
- विडियो कॉले के जरिये आमने–सामने बैठकर बातचीत की जा सकती है। यह सुविधा अन्य माध्यमों से महंगी है।
- अपनी लेखन सामग्री को सहेज कर रख सकते हैं। इसे जब चाहे स्वयं तथा दूसरे लोग भी लाभान्वित हो सकते हैं।
- सोशल साइट दुनिया को विश्वग्राम यानि ग्लोबल विलेज बनाने का माध्यम बना है।
- अपनी बात या विचार निःसंकोच रख सकते हैं।
- इसके माध्यम से मित्रों से उपयोगी पाठ्य सामग्री आसानी से प्राप्त की जा सकती है। सूचनाओं का आदान–प्रदान भी किया जा सकता है।
- देश में आर्थिक परिवर्तन, आर्थिक नीतियों, धार्मिक व सांस्कृतिक मुद्दों पर सोशल साइट्स की प्रमुख भूमिका है।

न्यायदर्श

व्यवहारिक तथा सामाजिक विषयों में शोध कार्यो में न्यादर्श का विशेष महत्व होता है। इसके बिना शोध कार्य पूरा नहीं किया जा सकता। विज्ञान विषयों में न्यादर्श का प्रयोग होता है परन्तु चयन की समस्या नहीं होती, परन्तु सामाजिक विषयों में न्यादर्श का प्रयोग होता है परन्तु चयन की समस्या नहीं होती, परन्तु सामाजिक विषयों में न्यादर्श के चयन की प्रमुख समस्या होती है कि किस प्रकार न्यादर्श की ईकाइयों का जनसंख्या में से चयन किया जाए जो उसका प्रतिनिधित्व कर सके सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना कठिन होता है तथा कभी–कभी असंभव भी होता है। न्यादर्श प्रविधि शोधकार्य को व्यवहारिक तथा समय धन–शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है। न्यादर्श के प्रयोग से शोध परिणामों को अधिक शुद्ध एवं मितव्ययी बनाया जाता है। उपरोक्त तथ्यो को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध विषय के अध्ययन हेतु सीहोर एवं खण्डवा जिले के विद्यालयों को लिया है जिससे विद्यालय के किशोर विद्यार्थी, को सम्मिलित किया गया है।

छात्र–छात्राए			
शहरी		ग्रामीण	
बालक	बालिका	बालक	बालिका
100	100	100	100

शोध उपकरण:–किसी समस्या के समाधान के लिए तथ्यो या आंकड़ो का एकत्रीकरण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके लिए उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। इस शोध में भी शोधकर्ता द्वारा आवश्यकतानुसार उपकरणों का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है जो निम्नानुसार है –

1. विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार।
2. अभिभावक व शिक्षको के लिए प्रश्नावली एवं साक्षात्कार।

इन उपकरणों का निर्माण स्वयं शोधार्थी द्वारा किया जायेगा। जिसे विद्यार्थियों, अभिभावक व शिक्षको के विचारों को जानने के लिए प्रयुक्त किया जाएगा।

सांख्यिकीय विधि

इस शोध हेतु रेखीय आरेख एवं सारणीयन द्वारा आंकड़ो को प्रदर्शित किया जाना प्रस्तावित है। एवं प्रतिशत विधि द्वारा परिणाम निकाले जायेंगे।

आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के तुलनात्मक परिणामों का विश्लेषण :

सारणी क्रमांक 1.0: शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शहरी छात्र	100	24.57	4.69	0.30	> 0.05
ग्रामीण छात्र	100	24.38	4.38		

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के मध्यमान क्रमशः 24.57 व 24.38 प्राप्त हुये, जिनमें 0.19 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान 0.30 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.97 की अपेक्षा कम है।

अतः उपरोक्त परिणाम के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण छात्रों के आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् छात्रों के आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव पर रहवास की प्रकृति (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उपरोक्त परिणामों को दण्डरेखा आरेख क्रमांक 01 में प्रदर्शित किया गया है।

दण्डरेखा आरेख क्रमांक 01

शहरी एवं ग्रामीण छात्रों पर आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव तुलनात्मक दण्डरेखा आरेख 01

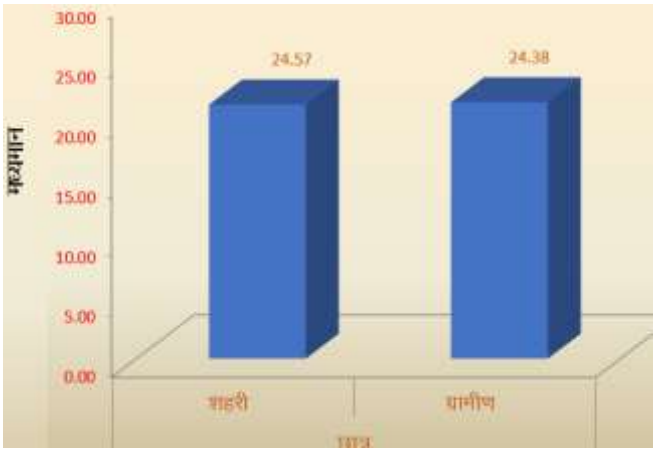

उपरोक्त दण्डरेखा आरेख से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के आधुनिक युग में किशोरों पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव का मध्यमान शहरी क्षेत्र के छात्रों से उच्च पाया गया, परन्तु क्रांतिक अनुपात परीक्षण द्वारा दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सारणी क्रमांक 4.06: शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं पर आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
शहरी छात्राए	100	24.31	4.52	0.98	> 0.05
ग्रामीण छात्राए	100	23.67	4.60		

उपरोक्त सारणी देखने पर मालूम होता है कि शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं पर आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के मध्यमान क्रमशः 24.31 व 23.67 प्राप्त हुये, जिनमें 0.64 का अंतर है, यह अंतर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान 0.98 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.97 की अपेक्षा कम है।

अतः उपरोक्त परिणाम के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव का सकारात्मक प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, अर्थात् छात्राओं के आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव पर रहवास की प्रकृति (शहरी व ग्रामीण) का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उपरोक्त परिणामों को दण्डरेखा आरेख क्रमांक 02 में प्रदर्शित किया गया है।

दण्डरेखा आरेख क्रमांक 02

शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव संबंधी

तुलनात्मक दण्डरेखा आरेख 02

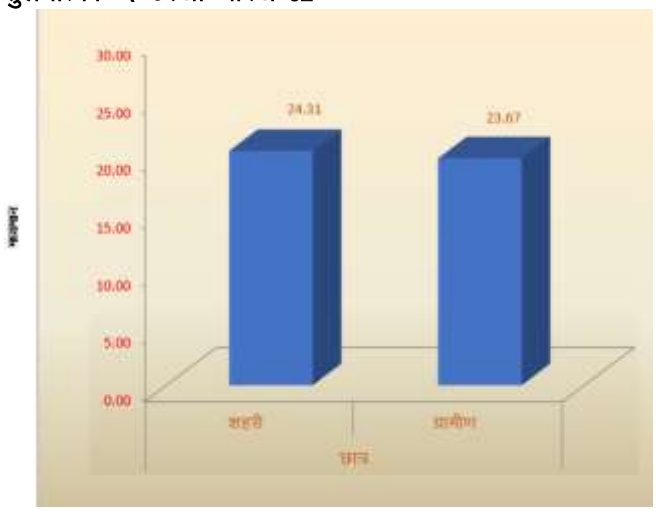

उपरोक्त दण्डरेखा आरेख से पता चलता है कि शहरी क्षेत्र के छात्राओं के आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों से उच्च पाया गया, परन्तु क्रांतिक अनुपात परीक्षण द्वारा दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

पूर्व में प्राप्त परिणामों के आधार पर विभिन्न चरों के लिये प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार प्राप्त हुये हैं –

1. न्यादर्श में लिए गये संपूर्ण छात्र/छात्रों में से अधिकांश का समग्र आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव औसत एवं उससे अधिक स्तर का पाया गया।
2. न्यादर्श में लिए गये संपूर्ण छात्रों में से अधिकांश का आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के विभिन्न क्षेत्रों (गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, विद्यालयीन) में स्तर औसत एवं उससे अधिक पाया गया।
3. न्यादर्श में ली गई संपूर्ण छात्राओं में से अधिकांश का आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के विभिन्न क्षेत्रों (गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, विद्यालयीन) में स्तर औसत एवं उससे अधिक पाया गया।
4. न्यादर्श में लिए गये संपूर्ण विद्यार्थियों में से अधिकांश का आधुनिक युग में सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव के विभिन्न क्षेत्रों (गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, विद्यालयीन) में स्तर औसत एवं उससे अधिक पाया गया।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्र को समय, साधनों की सीमा और शैक्षिक स्तर आदि को देखते हुए इसे खण्डवा एवं सीहोर के स्कूल तक सीमित रखा गया है परिणामों को अधिक वस्तु पर यर्थाथता एवं व्यापकता प्रदान करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में बडे आकार के न्यादर्श के साथ शोध को सम्पूर्णता प्रदान करना है। अनुसंधान करने के

बाद अनुसंधानकर्ता कुछ सुझाव देना जरूरी समझता है। जो निम्न है ।

1. विद्यालय में बालकों की मौलिकता का विकास करने के लिये प्रयत्न करना चाहिए।
2. बालकों को सही मार्गदर्शन मिलना चाहिए।
3. बालक को अच्छे नये विचार को प्रोत्साहित करना चाहिए।
4. कलास रूम में सृजनात्मक वैचारिक प्रक्रिया को बढ़ावा मिले ऐसा शैक्षिक कार्य करना चाहिए।
5. कालेज के छात्र और छात्राओं की टेक्नालाजी का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए।
6. भिन्न–भिन्न प्रवाहो के छात्र और छात्राओं की मीडिया प्रभाव का तुलनात्मकता का अध्ययन किया जाना चाहिए।
7. विद्यालय से लेकर कालेज तक के सभी छात्रों के अन्दर टेक्नालाजी के लिए शिक्षकों को जागरूकता पैदा करना चाहिए। जिससे की आधुनिक युग में छात्र सोशल मीडिया का सही उपयोग समझ सके।

संदर्भ सूची

1. मनोरमा इयर बुक 2011 कोमल किशोर अवस्था एवं बढता खुलापना– डॉ रत्नेश गुप्ता पृ. 280–285
2. टेक्नोलॉजी में आई क्रांति के फलस्वरूप कक्षाध्यापन में हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर व अन्य प्रभावकारी टेक्नोलॉजी को उपयोग करने का कौशल विकसित करना, गुणवत्ता को स्वीकार कर स्वयं को अनुकूलित करना।
3. आज शिक्षक को सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ सशक्त बनने हेतु – व्यावसायिक विकास के साथ संचार संप्रेषण तकनीक का पूर्ण ज्ञान होना साथ ही भारतीय संस्कृति के मूल्यों के अनुरूप शिक्षा का उचित संतुलन एवं सम्मिश्रण करना होगा। इस दिशा में ठोस एवं सार्थक प्रयास अपेक्षित हैं।